स्वतंत्रता - LIBERTY (1·3)

Liberty लैटिन भाषा के Liber शब्द से बना है जिसका अर्थ है - मुक्त, स्वतंत्र या "प्रतिबंधों का अभाव"। शाब्दिक रूप से इसका अर्थ है 'इच्छानुसार कार्य करने की स्वतंत्रता'।

लास्की - "स्वतंत्रता से अभिप्राय उस वातावरण से है जिसमें मनुष्यों को अपने व्यक्तित्व विकास का पूर्ण अवसर प्राप्त होता है।"

सीले - स्वतंत्रता अतिशासन की विरोधी है।

ग्रीन - स्वतंत्रता उन कार्यों को करने अथवा उन वस्तुओं को उपभोग करने की शक्ति है, जो करने या उपभोग करने योग्य हों।

मैकेंजी - स्वतंत्रता सभी प्रकार के प्रतिबंधों का अभाव नहीं है, बल्कि अनुचित प्रकार के प्रतिबंधों के स्थान पर उचित प्रकार के प्रतिबंधों की व्यवस्था है।

J.D.H.Cole - बिना किसी बाधा के अपने व्यक्तित्व को प्रकट करने के अधिकार का नाम स्वतंत्रता है।

बोसांके - स्वतंत्रता अन्य व्यक्तियों द्वारा दमन शक्ति का अभाव है।

रूसो - "स्वतंत्रता साधारण मनुष्य के सुशिक्षित विवेक पर विवेक आधारित इच्छा का प्रोत्साहन है।"

प्रकार

106

① प्राकृतिक स्वतंत्रता

② नागरिक स्वतंत्रता – जीवन, विचाराभिव्यक्ति, समुदाय निर्माण, धार्मिक स्वतंत्रता आदि।

③ व्यक्तिगत स्वतंत्रता – निवास, वेशभूषा, धर्म, परिवार, भ्रमण आदि – व्यक्तिवादी व बहुलवादी विचारक इसका प्रबल समर्थन करते हैं।

④ राजनीतिक स्वतंत्रता – लास्की – "इसका अर्थ है राज्य के कार्य व्यापार में हिस्सेदारी।" लीकाक – "इसका अभिप्राय लोगों के अपनी पसंद की सरकार चुनने से है – अर्थात संवैधानिक स्वतंत्रता।" गिलक्राइस्ट ने इसे क्रियात्मक रूप में प्रजातंत्र का समर्थक माना है। — सभी राजनीतिक अधिकार इसमें शामिल हैं। लास्की के अनुसार राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए दो बातें आवश्यक हैं—

① सभी नागरिकों को पर्याप्त सुविधाएं, व समान अवसरों की प्राप्ति।

② स्वतंत्र मीडिया।

आर्थिक स्वतंत्रता – यह कल्याणकारी विचारकों जैसे लास्की आदि की खोज है। जिनके अनुसार 'आर्थिक स्वतंत्रता का आशय व्यक्ति को जीविका हेतु समुचित सुरक्षा व सुविधा होनी चाहिए।" — इसका अर्थ मुक्त प्रतिस्पर्धा नहीं है।

① ~~काम~~ काम का अधिकार ② आराम व अवकाश का।

③ वृद्धावस्था में आर्थिक सुरक्षा का अधिकार।

④ कार्य की न्यायोचित अवधि व घंटे।

शुम्पीटर, कोएसलर, मूर्ट मिल्टन, जान गेल ब्रेथ आदि भी नवउदारवाद के स्वतंत्रता के समर्थक हैं। (17)

स्वतंत्रता की आवश्यक दशाएं (107)

① प्रजातंत्र ② स्वतंत्र न्यायपालिका ③ मूलाधिकार
④ संविधान ⑤ सीमित सरकार ⑥ आर्थिक समानता
⑦ शक्तियों का विकेन्द्रीकरण
⑧ जागरूक जनता — लास्की — "नागरिकों की महान भावना ही स्वतंत्रता की संरक्षक है न कि विधिक शब्दावली।"
जैफरसन — "कोई भी देश तब तक स्वतंत्र नहीं रह सकता जब तक कि समय-समय पर वहां की जनता अपनी विरोधी भावना का प्रदर्शन कर शासकों को सजग न रखे।"
⑨ स्वतंत्र व निष्पक्ष मीडिया.
⑩ विशेषाधिकारों का अन्त।

नकारात्मक स्वतंत्रता — बेंथम, मिल, स्पेंसर, एडम स्मिथ, तथा आधुनिक व्यक्तिवादियों में फ्रेडरिक आगस्टवोन हायक, मिल्टन फ्रीडमैन, राबर्ट नोजिक तथा आइजा बर्लिन — Asaiah Berlin हैं। इनके अनुसार स्वतंत्रता का अर्थ है बंधनों का अभाव। मिल — "प्रतिबंधों के रूप में हर प्रतिबंध दोष है... लोगों को उनकी इच्छा पर छोड़ना उन्हें नियंत्रित करने से बेहतर है।" स्पेंसर — के अनुसार भी राज्य को केवल पुलिस कार्य व बाह्य सुरक्षा से सम्बन्धित कार्य करने चाहिए। व्यक्ति का सर्वोपरि मूल्य प्राकृतिक अधिकार — Equal Freedom है।

F.A. Hayek ने Constitution of Liberty 1960 में स्वतंत्रता का नकारात्मक रूप प्रस्तुत किया है। इनके अनुसार — "मनुष्य को स्वतंत्रता तब प्राप्त होती है जब वह किसी दूसरे की मनमानी इच्छा के द्वारा विवश या बाध्य न हो।" — इसे हायक ने वैयक्तिक स्वतंत्रता — Individual Freedom की संज्ञा दी है। तथा इनके अनुसार यही स्वतंत्रता उदारवाद का मूल है।

→

बर्लिन - "स्वतंत्रता की परिभाषा के साथ छेड़छाड़ करने वाला कुछ भी कर सकता है।" (20)

(108)

हायक की दृष्टि में व्यक्ति स्वयं महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि उसकी स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसी के द्वारा मानवीय बुद्धि-तत्परता Intellect का निरंतर प्रयोग सम्भव है, जो प्रगति का सिद्धान्त है। इस प्रकार स्वतंत्रता का ध्येय समाज की उन्नति है, व्यक्ति का उन्नयन नहीं है। अतः समाज में स्वतंत्रता का मूल्यांकन इस आधार पर नहीं करना चाहिए कि यह कितने लोगों को प्राप्त है बल्कि यह देखना चाहिए कि इस स्वतंत्रता से सभ्यता को कितना लाभ हुआ है। अतः समाज में कोई स्वतंत्र न हो इससे अच्छा है कि कुछ लोग स्वतंत्र हों। हायक की दृष्टि में व्यक्ति का महत्व इसलिए नहीं है कि वे स्वयं साध्य हैं, बल्कि इसलिए है कि वे सामाजिक प्रगति के साधन हैं। इनकी अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं— Road to Serfdom-1944. Law Legislation and Liberty-1973. इन्हें 1974 में अर्थशास्त्र का नोबल पुरस्कार मिला था।

Isaiah Berlin के अनुसार

एकलवादी सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को एक परिभाषा देना चाहते हैं। वे समस्त सामाजिक मूल्यों और संस्थाओं को एक श्रेणीतंत्र - Hierarchy का रूप देकर एक मूल्य या संस्था की सर्वोच्चता स्थापित करना चाहते हैं। इसके विपरीत बहुलवादी यह मानते हैं कि मनुष्यों के भिन्न-भिन्न मूल्यों एवं हितों के बीच एक स्थायी मतभेद पाया जाता है, और किसी एक मूल्य की तुलना में किसी अन्य मूल्य को कम महत्वपूर्ण या गौण नहीं माना जा सकता। बर्लिन - "जो जैसा है, वैसा है, स्वतंत्रता, स्वतंत्रता है वह समानता, न्याय, संस्कृति या मानवीय सुख का पर्याय नहीं हो सकती।" बर्लिन Four essays on Liberty-1969 में अपने बहुलवादी विचारों →

के अनुरूप स्वतंत्रता की नकारात्मक व्याख्या देते हैं।

बर्लिन के अनुसार राज्य केवल व्यक्ति की नकारात्मक स्वतंत्रता की रक्षा कर सकता है, सकारात्मक स्वतंत्रता की रक्षा करना राज्य के कार्य क्षेत्र में नहीं है। नकारात्मक स्वतंत्रता प्रतिबंधों के अभाव की माँग करती है। जबकि सकारात्मक स्वतंत्रता अपेक्षा करती है कि व्यक्ति को अपने ऊपर पूर्ण आत्म नियंत्रण हो। बर्लिन के अनुसार राज्य सकारात्मक स्वतंत्रता में कुछ नहीं कर सकता। राज्य केवल यह कर सकता है कि वह व्यक्ति की स्वयं निर्धारित गतिविधियों पर कोई प्रतिबंध न लगाए। इस अर्थ में स्वतंत्रता केवल नकारात्मक हो सकती है और वह ऐसी व्यवस्था की माँग करती है जिसमें व्यक्ति को उसकी क्षमतानुसार अपने ध्येय की प्राप्ति के दौरान अन्य व्यक्तियों से किसी बाधा का सामना न करना पड़े। अर्थात् यदि कोई व्यक्ति किसी विशेष सुविधा के भोग करने या कोई अन्य कार्य करने में अन्तर्निहित रूप से सक्षम नहीं है, और उसे ऐसा कर सकने का कानूनी अधिकार है तो, वह यह नहीं कह सकता कि उसे राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है। अपनी आकांक्षा पूरी कर पाने या न कर पाने की क्षमता या अक्षमता व्यक्ति का अपना व्यक्तिगत मामला है, इसमें राज्य कुछ नहीं कर सकता। राज्य केवल समान अधिकार व समान अवसर प्रदान कर सकता है।

Milton Freedman ने Capitalism and Freedom में अपने Political Economy सम्बन्धी विचार प्रकट किए हैं। विभिन्न आर्थिक प्रणालियों और राजनीतिक प्रणालियों पर विचार करने के बाद फ्रीडमैन इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए प्रतिस्पर्धात्मक पूंजीवाद आवश्यक है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अर्थ है कि, किसी मनुष्य को उसके सहचर Fellowman किसी तरह बाधित न करें।

(110) Friedman ने आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता में तार्किक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया। इसके अनुसार सामाजिक संगठन की मूल समस्या यह है कि, आधुनिक युग की ढेर सारी व्यापक आर्थिक गतिविधियों में किस प्रकार संतुलन स्थापित किया जाए। दूसरे शब्दों में समाज की व्यापक आर्थिक गतिविधियों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता में किस प्रकार सम्बन्ध स्थापित हो। इसके दो तरीके हैं — ① पहला सर्वाधिकारवादी तरीका है ② दूसरा तरीका ऐच्छिक सहयोग - Voluntary - co-operation का है जिसमें आर्थिक लेनदेन न मात्र ऐच्छिक हो बल्कि प्रतिबंध रहित भी हो। ऐसे समाज का व्यावहारिक प्रतिरूप — Free Private enterprise exchange - मुक्त निजी उद्यम विनिमय अर्थव्यवस्था होगा। इस प्रकार Friedman लोकतंत्र को बाजार अर्थव्यवस्था के साथ मिलाने की वकालत करता है। इसके अनुसार राज्य को केवल वही कार्य करने चाहिए जिन्हें बाजार अर्थव्यवस्था या तो बिल्कुल नहीं कर सकती या जिसकी लागत इतनी ज्यादा हो कि उसे राज्य ही कर सकता हो। सरकार का कार्य बाजार अर्थव्यवस्था को सहारा देना तथा उसके बचे खुचे कार्य पूरे करना है, उस पर नियंत्रण आरोपित करना नहीं है।

Robert Nozick ने 'Anarchy State and Utopia' - 1974 में लॉक के राज० दर्शन को पुनर्जीवित किया है। लॉक की भांति नोजिक भी यह तर्क देते हैं कि, प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य के कुछ अधिकार होते हैं जिनमें सबसे मौलिक प्राकृतिक अधिकार है — सम्पत्ति का अधिकार। इसी अधिकार की रक्षार्थ मनुष्य विभिन्न संरक्षक संस्थाएं Protective Institutions नियुक्त करते हैं। जिनमें →

Dr SHAKEEL HUSAIN

सर्वोपरि प्रमुख संरक्षक संस्था राज्य का रूप धारण करती है। अतः राज्य का सर्वप्रमुख कार्य व्यक्तिगत सम्पत्ति की रक्षा करना है। सम्पत्ति के अधिकार के अलावा समाज में अन्य जिन अधिकारों का जन्म होता है वे सब सम्पत्ति के स्वैच्छिक विनिमय के परिणाम हैं। राज्य को सम्पत्ति के लाभ के पुनर्वितरण का भी अधिकार नहीं है, यह अधिकार भी व्यक्ति का है।

Nozick के चिन्तन का लक्ष्य – व्यक्ति – है समाज या राज्य की वैधता – Legitimacy – वहीं तक है जहां तक वे व्यक्तियों के स्वैच्छिक समूह – Voluntary Aggregations, हैं। व्यक्ति साध्य है और प्रत्येक प्रतिबंध बुरा है।

सकारात्मक स्वतंत्रता – सकारात्मक स्वतंत्रता मौलिक प्रतिपादक T.H. Green को माना जाता है। जिसने उचित प्रतिबंधों सहित स्वतंत्रता की व्याख्या की। ग्रीन – "जिस प्रकार सुंदरता कुरूपता के अभाव का नाम नहीं है। इसी प्रकार स्वतंत्रता प्रतिबंधों के अभाव का नाम नहीं है।"

यद्यपि बेंथम और मिल व्यक्तिवादी हैं इसके बावजूद शिक्षा, स्त्रियों की दशा, श्रमिकों की स्थिति, न्याय एवं स्वास्थ्य जैसे विषयों पर राज्य की भूमिका और हस्तक्षेप को आवश्यक मानते हैं। वे कानून के माध्यम से इस प्रकार के सुधारों को आवश्यक मानते हैं। अतः इनके मत विधि और स्वतंत्रता परस्पर विरोधी नहीं है। मिल ने व्यक्ति के स्व सम्बन्धी नहीं बल्कि पर सम्बन्धी कार्यों पर राज्य के हस्तक्षेप को उचित ठहराया है। इसके अलावा बीसवीं सदी में लास्की, गार्नर, बार्कर, एवं सी.बी. मैकफर्सन स्वतंत्रता के सकारात्मक सिद्धांत के समर्थक हैं।

→

Dr SHAKEEL HUSAIN

मैकफर्सन- "सकारात्मक स्वतंत्रता एक पूर्ण मानव के रूप में कार्य करने की स्वतंत्रता है। यह मानव की अपने विकास करने की शक्ति है।" (24)

(112) C.B. McPherson ने 'Democratic Theory: Essays in Retrieval' तथा The Real World of Democracy' में अपने Possessive Individualism, लोकतंत्र तथा सृजनात्मक स्वतंत्रता सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किए हैं।

मैकफर्सन के अनुसार पाश्चात्य लोकतंत्र में दो तत्व पाए जाते हैं — ① उपयोगिताओं का अधिकतम विस्तार जिसे मूलतः बेंथम ने प्रस्तुत किया। ② शक्तियों का अधिकतम विस्तार जिसका प्रतिपादन मिल ने किया। मैकफर्सन शक्तियों के विस्तार के दो भेद करता है — ① दोहन शक्ति तथा ② विकासात्मक शक्ति।

मैकफर्सन के अनुसार एक बाजारवादी व्यवस्था में सम्पत्तिहीन व्यक्ति की विकासात्मक शक्ति नगण्य होती है क्योंकि उसके पास उसके लिए संसाधन नहीं होते। तथा उसकी दोहन शक्ति तो पूर्णतः शून्य होती है। क्योंकि वह दोहन की स्थिति में नहीं होता। दूसरी ओर सम्पत्तिशाली व्यक्ति दोनों शक्तियों की उच्चतम अवस्था में होता है, इसलिए वह शक्तियों का अधिकतम विस्तार कर पाता है। मैकफर्सन के अनुसार विकासात्मक शक्ति का अधिकतम विस्तार ही मनुष्य की सृजनात्मक स्वतंत्रता की कुंजी है। अतः सम्पत्तिहीन व्यक्ति की सृजनात्मक स्वतंत्रता केवल गैरबाजारवादी समाजवादी Non Market Socialist Society में ही सम्भव है।

Leo Strauss - 'Natural Right and History' में मैकियावली, स्पिनोजा एवं हॉब्स के classical Political Theory को पुनर्जीवित किया। स्ट्रास ने सकारात्मक स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए लिखा है कि — "मानव का मानव के साथ ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं है जिसमें उसे जैसा

(113)

चाहे वैसा करने की स्वतंत्रता है... स्वतंत्रता की व्यापक भावना के साथ यह भावना भी जुड़ी है कि स्वतंत्रता का परम एवं अप्रतिबंधित प्रयोग उचित नहीं है। ... अतः प्रतिबंध उतना ही प्राकृतिक है जितनी स्वतंत्रता।"

उपर्युक्त के अतिरिक्त जोसेफ शुम्पीटर, लुई फिशर, आर्थर कोस्लर, जानगैलब्रेथ ने भी स्वतंत्रता के नकारात्मक सिद्धांत का समर्थन किया है तथा स्वतंत्रता के लिए प्रतियोगिता पूर्ण बाजारवादी लोकतांत्रिक व्यवस्था को इसकी आवश्यक शर्त बताया।

स्वतंत्रता एवं कानून –

व्यक्तिवादियों और अराजकतावादियों के अनुसार स्वतंत्रता व कानून परस्पर विरोधी है। सीले — "पूर्ण स्वतंत्रता का अर्थ है सरकार का पूर्ण अभाव"। गाडविन — "कानून अत्यन्त दोषपूर्ण संस्था है।" बेंथम — "कानून अनिवार्य दोष है।" स्पेंसर एवं राबर्ट डिलमर भी कानून व स्वतंत्रता को परस्पर विरोधी मानते हैं। किन्तु लॉक के अनुसार — "कानून स्वतंत्रता के लिए अनिवार्य दशा है। कानून स्वतंत्रता का हनन तथा नियंत्रण नहीं बल्कि उसका संरक्षण व वृद्धि करता है।"

आदर्शवादियों के अनुसार कानून के पालन में ही यथार्थ स्वतंत्रता है। रूसो, ग्रीन, काण्ट, हीगल, ब्रेडले, बोसांके आदि का यही मत है। लास्की — "वे ही कानून मेरी स्वतंत्रता में बाधक नहीं हैं जो मेरी आत्मोन्नति में बाधा नहीं पहुंचाते।

Dr SHAKEEL HUSAIN

समानता - EQUALITY (114)

L.T. Hobhouse ने "Elements of Social Justice" में समानता की उदारवादी व्याख्या करते हुए लिखा है कि — "समानों के साथ समान व्यवहार होना चाहिए और असमानों के साथ असमान, तथा जिस संदर्भ में उन्हें असमान समझा गया हो वह प्रभावित व्यवहार भेद के साथ प्रासंगिक होना चाहिए।" साधारण शब्दों में समानता से आशय है अधिकारों व अवसरों की समानता।

John Rawls के अनुसार समानता के विचार में दो तत्व अनिवार्य हैं

① प्रत्येक व्यक्ति व्यापक मूल स्वतंत्रता का अधिकार हो जो अन्य व्यक्तियों की इसी प्रकार की स्वतंत्रता के अनुकूल हो।

② (A) पर्याप्त सीमा तक प्रत्येक के लिए लाभ युक्त हो,

(B) सभी के लिए खुले तौर से स्थानों एवं पदों से सम्बन्ध हों (अवसर की समानता) —— इस प्रकार समानता के विचार में अधिकार व अवसर की समानता मूल है। इसमें समाजवादी धारणा के मिश्रण से समानता का विचार सामाजिक कल्याण की धारणा से स्वीकृत हो गयी है।

नकारात्मक समानता - का अर्थ है धर्म, जाति, लिंग, भाषा, क्षेत्र, देश, नस्ल, जन्म-स्थान आदि के आधार पर भेदभाव न होना।

सकारात्मक समानता - का अर्थ है - सभी के लिए समान अधिकारों व अवसरों की व्यवस्था। लेकिन समाज के कमजोर वर्गों के लिए विशेष प्रावधान किए जा सकते हैं।

समानता का पात्रता सिद्धान्त → Desert Theory - J. Rees ने 'Equality' तथा Rawls ने 'A Theory of Justice' में इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। इनके अनुसार →

(15)

मानवीय प्रतिभा नैसर्गिक रूप से असमान होती है। अतः अवसरों की समानता का विचार योग्यता की मात्रा से जुड़ा होना चाहिए। जो नैसर्गिक रूप से अधिक पात्र है उसे आर्थिक समृद्धि व राजनीतिक प्रमुखता प्राप्त करने की दौड़ में मुक्त छोड़ देना चाहिए।

लास्की – "यदि मुझे अपने सर्वोत्तम विकास का अधिकार है तो इसका तार्किक फल है कि दूसरों को भी ऐसा अधिकार है।"

सिसरो – "कोई अन्य वस्तु इतनी समान नहीं है जितना एक मानव एक दूसरे से समान है।"

जे. फ्रेडरिक – "राजव्यवस्था में प्रजातांत्रिक वैधता जिस मात्रा में होगी उसी मात्रा में राज० समानता अभिव्यक्त होगी।"

① प्राकृतिक समानता – नकारात्मक समानता, विशेषाधिकारों का अभाव

② सामा० समानता — सामा० विभेद का निषेध.

③ राजनीतिक समानता – ① सार्वभौम वयस्क मताधिकार.
② खुली भर्ती ③ निष्पक्ष व समयबद्ध निर्वाचन,
④ स्वतंत्र मीडिया ⑤ विशेषाधिकारों का अभाव.

④ आर्थिक समानता – ① न्यूनतम वेतन की गारण्टी.
② दुर्बल वर्गों हेतु विशेष प्रावधान.
③ उत्पादन के साधनों का राष्ट्रीयकरण,
④ संसाधनों का समानुपातिक वितरण.

⑤ वैधानिक समानता – ① विधि के समक्ष समानता.
② विधि का समान संरक्षण ③ सभी स्तरों पर समानता.
④ सस्ता न्याय.

→

स्वतंत्रता व समानता (116)

व्यक्तिवादियों के अनुसार स्वतंत्रता व समानता परस्पर विरोधी हैं। मैथ्यू आर्नोल्ड - "समानता की अभिव्यक्ति व मानवता की रक्षा में मौलिक अंतर है।" लॉर्ड एक्टन - "सभी व्यक्ति समान हैं यह विषैला सिद्धांत है।" सर अर्नेस्ट बेन - "आर्थिक समानता एक वैज्ञानिक असम्भावना है।"
हायक - "यदि हम इन्हें (लोगों को) को समान समझते हैं तो हमें इनके साथ भिन्न व्यवहार करना होगा।" लॉर्ड एक्टन - "समानता की तीव्र अभिलाषा के कारण स्वतंत्रता की आशा समाप्त हो जाती है।" डी. टाकविले भी स्वतंत्रता व समानता को परस्पर विरोधी मानते हैं।
नार्मन - "केवल लोगों के जीवन में व्यापक हस्तक्षेप द्वारा ही समानता तक पहुंचा जा सकता है।"
हॉबहाउस, टॉनी, बार्कर, मैटलैण्ड, रूसो, लास्की, मैकाइवर, हाबहाउस, आर. एच. टॉनी स्वतंत्रता व समानता को परस्पर पूरक मानते हैं।
हाबहाउस - "समानता के बिना स्वतंत्रता ऐसा कथन है, जिसका स्वर तो ऊंचा है किन्तु परिणाम बड़े भद्दे हैं।"
R. H. Tawney - "समानता की विशाल मात्रा स्वतंत्रता की शत्रु तो दूर वह इसके लिए आवश्यक है।" बार्कर - "यह कहना ठीक रहता है कि समानता कोई अलग सिद्धांत नहीं है। यह स्वतंत्रता व भ्रातृत्व के सिद्धांतों का सहवर्ती है।" रॉबर्ट डहल - ने राज. स्थायित्व व आर्थिक समानता परस्पर सम्बन्धित है। - "यदि हम चाहते हैं कि राज. स्थायित्व व सरकार का लोकतंत्रीय स्वरूप बना रहे तो हमें भू-सुधार, कर प्रणाली में सुधार तथा शिक्षा सुधार करके आर्थिक क्षेत्र में समानता को लाना होगा।"
लास्की - "आर्थिक समानता के बिना राज. समानता की आशा

(17) करना व्यर्थ है।" J.F. Stephens – " स्वतंत्रता के लिए राज० व्यक्तिक नागरिक, तथा सामा० समानताएं आवश्यक है।"

बार्कर – " समानता का कोई अलग-थलग सिद्धांत नहीं है। यह स्वतंत्रता व भ्रातृत्वता के सिद्धांत का सहगामी है।" लास्की – " किसी न किसी मात्रा में समानता के बिना स्वतंत्रता खोखली होगी और स्वतंत्रता के बिना समानता निरर्थक होगी।" ह्रखर्ट डीन – " स्वतंत्रता व समानता न तो परस्पर विरोधी है न पृथक। वे एक ही आदर्श के दो रूप है।"

Dr SHAKEEL HUSAIN